ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL**04292**
RNI REG. NO. UPBIL/**2014/66218** **PP. No.- 291-292**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

आधुनिक कालीन इतिहास लेखन

डॉ0 राकेश रंजन
प्राचार्य, बुद्ध पी. जी. कॉलेज, रतसिया कोठी, देवरिया (उ0प्र) भारत

Received-28.08.2026, Revised-06.09.2026, Accepted-13.09.2026, E-mail:aaryvart2013@gmail.com

सारांशः – ***भारतीय इतिहास लेखन की नवीन विकास यात्रा 18वीं सदी में पाश्चात्य यात्रियों एवं ईसाई मिशनरियों के आगमन से शुरू हुई। यूरोपीय देशों के अनेक यात्रियों तथा ईसाई धर्मप्रचारकों के यात्रा विवरणों के द्वारा भारत में भी पश्चिमी इतिहास लेखन का सूत्रपात हुआ। इन्होंने भारतीय समाज तथा शिक्षा के विभिन्न पक्षों को प्रभावित करते हुए इतिहास लेखन में नवीन दृष्टि उत्पन्न की।***

इस प्रकार 18वीं सदी से भारत में आधुनिक जीवन मूल्यों के साथ भारतीय इतिहास लेखन में नवयुग का श्रीगणेश हुआ। 1757 ई. के प्लासी के युद्ध को आधुनिक भारत का जन्म एवं मध्यकाल का अंत माना जा सकता है। भारतीयों की इस पराजय ने भारतीयों को अपने अतीत में झांकने के लिए प्रेरित किया।

कुंजीभूत शब्द– राष्ट्रीय शिक्षा नीति,भारतीय ज्ञान परंपरा,सामुदायिक, सांप्रदायिक अधीनता,एकत्वबुद्धि सर्वदा अविरोधिनी, बौद्धिक संवाद।

प्रस्तावना– दूसरी ओर पश्चिमी विद्वानों एवं प्रशासकों ने भी भारत की धरोहर में रुचि दिखाई, क्योंकि उन्हें भारतीय संस्कृति को विधिवत जानने की जिज्ञासा थी, जिससे ब्रिटिश उपनिवेशवाद कायम किया जा सके।

पाश्चात्य विद्वान एवं संस्थागत प्रयास–

- **एशियाटिक सोसाइटी की स्थापनाः** 1784 ई. में विलियम जोन्स ने बंगाल में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की।
- **प्राचीन लिपियों का अध्ययनः** जेम्स प्रिंसेप तथा चार्ल्स विल्किंस द्वारा भारत की प्राचीन लिपि का अध्ययन किया गया।
- **पुरातत्व की खोजः** 1783–84 ई. में विलियम जोन्स की सलाह से भारतीय पुरातत्व की खोज के संबंध में पहल की गई, जिससे नवीन ऐतिहासिक तथ्यों का प्रकाशन हुआ।
- **मौलिक स्रोतों का प्रकाशनः** पाश्चात्य विद्वानों ने संस्कृत, पालि, प्राकृत, फारसी, उर्दू, तुर्की आदि भाषाओं में लिखित मौलिक स्रोतों को प्रकाश में लाने का प्रयास किया।

प्रमुख क्षेत्रीय इतिहास ग्रंथ

लेखक	ग्रंथ का नाम
टॉड	एनल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान (दो जल्द में)
जे. एफ. फ्लीट	डायनेस्टीज ऑफ कनारीज डिस्ट्रिक्ट
ई. सी. बेले	लोकल मोहम्डन डायनेस्टीज ऑफ गुजरात
एच. विलियम	काठियावाड़ का इतिहास

औपनिवेशिक दृष्टिकोण एवं विचारधाराएं– एलफिंस्टन और विलियम जोन्स अपेक्षाकृत अधिक सहनशील इतिहासकार थे, जबकि सर जॉन शोर और चार्ल्स ग्रांट की नीयत भारतीयों को ईसाइयत का अमलीजामा पहनाने की थी।

विलियम जोन्स ने मनुस्मृति के अपने अनुवाद (1794 ई.) के आमुख में अपनी औपनिवेशिक नीति को स्पष्ट करते हुए कहा कि यदि इस नीति पर चला जाए तो लाखों–करोड़ों हिन्दू प्रजा द्वारा सुनियोजित उद्योग–धंधे काफी हद तक ब्रिटेन की धन–संपत्ति में वृद्धि करेंगे।

ग्रांट डफ और जेम्स मिल ने भारतीयों को सुसंस्कृत करना अंग्रेजों का दायित्व मानते हुए सरकार द्वारा समाज सुधार पर बल दिया। हेनरी मेन, स्टेफन तथा सर जॉन स्ट्रेची भी इसी साम्राज्यवादी दृष्टिकोण के समर्थक थे।

अल्फ्रेड लायल तथा हंटर ने इससे भिन्न दृष्टिकोण रखते हुए भारत और उसकी संस्कृति के प्रति उदारतापूर्ण भाव व्यक्त किया कि "भाषा की दृष्टि" से भारतीय और अंग्रेज दोनों एक ही आर्य परिवार के हैं। उनकी दृष्टि में पश्चिम के देश भारत के ऋणी हैं, अतः यूरोप को समझने के लिए भारत के अतीत का ज्ञान जरूरी है। इसी उदारवादी दृष्टिकोण के तहत हावेल ने 1918 ई. में प्राचीन काल से अकबर के काल तक का इतिहास लिखा तथा वी. जी. चाइल्ड ने 1926 ई. में आर्यों पर शोध ग्रंथ प्रस्तुत किया।

पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं भारतीय इतिहासवेत्ता– लॉर्ड कैनिंग के काल में (1861–1925) भारत के प्राचीन गौरव की ओर सरकार का ध्यान गया।

- **1871 ई.:** कनिंघम ने भारत के पुरातात्विक शास्त्र की नींव रखी।
- **1878 ई.:** पुराविशेष कानून पारित कर पुरा–अवशेषों को सरकारी संपत्ति घोषित किया गया।
- **शोधकर्ताः** स्टेनकोनो, फ्लीट, पीटरसन, बूलर, लूडर्स, सेनार्ट आदि ने अनेक सराहनीय शोध किए।
- **भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (ASI):** सर जॉन मार्शल, मैके, माधो स्वरूप वत्स, के. एन. दीक्षित आदि पुरातत्वविदों की देखरेख में भारतीय धरोहरों को प्रकाश में लाया गया।

रॉयल एशियाटिक सोसाइटी की विभिन्न शाखाओं की देखरेख में साहित्यिक स्रोतों को भी प्रकाश में लाया गया। हरप्रसाद शास्त्री, राजेंद्र लाल मित्र, भगवान लाल इंद्रजी आदि इतिहासवेत्ताओं ने मूल संस्कृत स्रोतों को प्रकाशित किया।

प्रो. आर. जी. भंडारकर ने 1884 ई. में "अर्ली हिस्ट्री ऑफ द दक्कन" (Early History of the Dekkan) की रचना की। इसके बाद विंसेंट स्मिथ ने साहित्यिक एवं पुरातात्विक स्रोतों के समन्वय से नवीन इतिहास प्रस्तुत किया तथा 1904 ई. में "अर्ली हिस्ट्री ऑफ इंडिया" पुस्तक में भारत का राजनैतिक इतिहास क्रमबद्ध रूप से प्रस्तुत किया।

राष्ट्रवादी दृष्टिकोण एवं भारतीय इतिहास लेखन– इतिहास लेखन के पाश्चात्य दृष्टिकोण ने भारतीयों की भी आंखें खोलीं और भारतीय इतिहासकारों के लेखन में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की वृद्धि हुई:

1. **रमेश चंद्र दत्त (1887 ई.):** ब्राह्मणकालीन सभ्यता पर लेख लिखकर सिद्ध किया कि प्राचीन काल के राजा का अपनी प्रजा के प्रति न्यायपूर्ण व्यवहार था।

अनुरूपी लेखक / संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e–I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-20, No.- III, Issues-41, YEAR- July-Sept. 2026

2. **बंग–भंग आंदोलन (1905 ई.):** इस आंदोलन से इतिहास लेखन में और तेजी आई।
3. **ए. सी. दास (1907 ई.):** स्पष्ट किया कि प्राचीन भारत में सीमित राजतंत्र था और स्थानीय स्वशासन आज के ब्रिटिश शासन से कहीं बेहतर था।
4. **श्याम शास्त्री (1905 ई.):** कौटिल्य के अर्थशास्त्र का प्रकाशन किया, जिसने स्वर्णिम राजशासन को प्रमाणित कर दिया।
5. **के. पी. जायसवालः** "हिंदू पालिटी" के माध्यम से राष्ट्रवादी विचारधारा का आधार तैयार किया।

सामाजिक एवं क्षेत्रीय राजवंशों का इतिहास–

- सामाजिक क्षेत्रः 19वीं शताब्दी में राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी दयानंद सरस्वती, आर. जी. भंडारकर आदि ने सामाजिक आंदोलनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- सामाजिक इतिहास ग्रंथः जी. एच. मीज ने "धर्म एंड सोसाइटी" में वर्णगत व्यवस्था की समीक्षा की, वहीं जोली, विंटरनिट्ज आदि ने धार्मिक विचारों को सामाजिक इतिहास का नियामक माना।
- क्षेत्रीय राजवंशों का लेखनः एच. सी. राय ने "डायनेस्टिक हिस्ट्री ऑफ नॉर्दर्न इंडिया" से इसकी शुरुआत की। इसके बाद गुर्जर–प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट, चंदेल, चालुक्य, काकतीय, चोल, यादव, चौहान आदि राजवंशों पर शोध ग्रंथ लिखे गए।

संस्कृति एवं कला का इतिहास– आधुनिक काल में भारतीय संस्कृति के विविध घटकोंकृकला, स्थापत्य, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत, मृण्मूर्तिकला, युद्धशास्त्र आदि का स्वतंत्र इतिहास लेखन शुरू हुआः

- **गौरीशंकर हीराचंद ओझाः** "प्राचीन भारतीय लिपिमाला" का प्रकाशन।
- **प्रो. बी. बी. लाल एवं प्रो. सांकलियाः** पुरातात्विक स्रोतों के आधार पर अति प्राचीन इतिहास प्रस्तुत किया।

राधाकुमुद मुखर्जी, पर्सी ब्राउन, बेंजामिन रोच, भगवत शरण उपाध्याय, जिमरः भवन निर्माण एवं मूर्तिकला पर महत्वपूर्ण ग्रंथ लिखे।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पर्सीवल स्पीयर – ए हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पेंग्विन, 1987, पृ. 61.
2. इंसटीट्यूट ऑफ हिन्दू लॉ, प्रिफेस, पृ. 19.
3. जेम्स मिल – हिस्ट्री ऑफ ब्रिटिश इंडिया, 1806.
4. अल्फ्रेड लायल – राइज़ एंड एक्सपेंशन ऑफ द ब्रिटिश डोमिनियन इन इंडिया, 1894.
5. डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर – इम्पीरियल गज़ेटियर ऑफ इंडिया, 1899–1907.
6. सुरेंद्र नाथ राय – हिस्ट्री ऑफ इंडियन आर्कियोलॉजी, दिल्ली, 1961.
7. कलेक्टेड वर्क्स ऑफ भंडारकर, 4 भाग, पूना, 1927–33.

*****